Class : इस रूट की सभी लाईने व्यस्त हैं

All The Lines Of This Route Are Busy

BK Dr. Sachin Bhai

22-02-2020

Diamond Hall, Shantivan

ओम शांति, ईसाई धर्म के संस्थापक जीजस क्राइस्ट उनके जीवन में एक शायद काल्पनिक कहानी का वर्णन है। उन्होंने अपने सभी 12 शिष्यों से कहा कि यदि स्वर्ग में चलना चाहते हो तो मेरे पीछे आओ, फॉलो मी और उन सभी को एक-एक क्रोस लकडी का बना हुआ दिया और खुद भी एक क्रोस उठाया और वो सभी शिष्य चल पडे, यात्रा लंबी थी, 40 दिनों की। सबने सोचा था, शायद यात्रा बहुत सुगम होगी, पर ये क्या तेज धूप, कभी बारिस, कभी नदी, कभी पहाड, कभी खाई, तो कभी कुछ, यात्रा बहुत ही कष्टकारी थी। सभी शिष्य खुशी-खुशी से जा तो रहे थे परंतु न पानी था, न भोजन, निर्जला यात्रा थी, 40 दिन की। उनमें से एक शिष्य जिसके बारे में कहते हैं जिसने ईसा मसीह को धोखा दिया था— यहूदा वो जिसने बाद में दिखाया है 30 रूपये में अपने ही गुरू को बेच दिया था। वो कहने लगता है कि हम ही इतना दुःख क्यों सहन करें दुनिया के लोग कितने आराम से चल रहे हैं हमें ही इतनी तकलीफें क्यों, हमें ही इतनी बंदिशें क्यों, ये सारे उपवास, ये कठिनाई, ये मार्ग की थकान, ये कष्ट पर वो भी चुपचाप उन सभी शिष्यों के साथ चलता रहता है। 20 दिन पूरे हो जाते है, न खाया है, न पीया है सब विकलांग हो गये हैं पर फिर भी चल रहे हैं, क्योंकि जीजस क्राइस्ट खुद भी चल रहा है, और उसका जो क्रोस है वह बाकियों से 2 गुना बड़ा है, उसमें से एक शिष्य होता है पीटर, वो कहता है आखिर हम कब तक ऐसे चलते रहेंगे। पर दूसरा और एक शिष्य उसे समझाता है जेम्स कि देखो कि हमारा जो टीचर है, हमारा जो मास्टर है, हमारा जो मालिक है वो भी तो चल रहा है आगे और उसका जो क्रोस है वो हमसे 2 गुना बड़ा है। वो चल रहा है तो हम क्यों न चलें। वो आगे है हम क्यों न उसके पीछे चलें और जब वो कह रहा है *(द प्रोमिस्ट लैंड, द किंगडम ऑफ हैविन)* स्वर्ग का वो राज्य जो अब बस आने को है और वो पीटर फिर चलने लगता हैं पर जो वो यहूदा होता है उसका मन अशांत है, दुखी है, आलस्य ने घेरा है कहीं, चलने की इच्छा नहीं है फिर भी चल रहा है। युक्ति सोचता है, चाकू निकालता है और अपना जो क्रोस है उसको थोडा छोटा करता है, जब-जब कोई बाधा आती है, जब–जब कोई समस्या आती है तब-तब उस क्रोस को वो छोटा करता जाता है, काटता जाता है, ताकि वजन कम हो। एक समय ऐसा आता है कि कोई पहाडी पर चढते चढते जीजस का पैर फिसलता है और वो पीटर खुद उसको संभालता है और तब पाता है कि इसका जो क्रोस है वह केवल बड़ा ही नहीं है, 5 गुना भारी भी है और ईसा मसीह का कंधा जो है, वो लहू-लुहान हो गया है, इतना भारी वो क्रूस उठाते उठाते परंतु कोई कंपलेंन नहीं, परंतु

कुछ बोला है, परंतु वो चले जा रहा है। *(द किंगडम ऑफ हेवन इज एट हैंड)* स्वर्ग का राज्य बस अब आने ही वाला है और चलते-चलते आखिर वो एक अंतिम पड़ाव में पहुंचते है कि बस अब स्वर्ग दिखाई देने लगा है परंतु बीच में बहुत बड़ी खाई है। पीटर पूछता है लॉर्ड, हे मालिक, अब हम कैसे जायें उस पार | जीजस क्राइस्ट कहता है, अपना अपना क्रोस निकालो और डाल दो और उस पर चढकर तुम उधर पहुंच जाओगे, सभी ऐसा करते हैं और सभी पहुंच जाते हैं परंतु जब यहूदा की बारी आती हैं वो जुडास। जैसे ही वो अपना क्रोस डालता है, क्योंकि छोटा करते-करते-करते वो इतना छोटा हो गया है कि वो पहुंच ही नहीं सका और जैसे ही वो डालता है और उस पर चढने जाता है, गिरता है उस खाई में और बाकि सब स्वर्ग के राज्य में पहुंच जाते हैं। शायद कहानी झूठी हो पर झूठे होने से उसमें जो सत्य भाव है वो परिवर्तित नहीं होता है।

सभी यात्रा पर निकल पड़े हैं, यात्रा दुर्गम है, यात्रा कष्टकारी है परंतु जिनके मन में विश्वास है, परंतु वो जो क्रोस है वो प्रभु प्रेम का क्रोस है और जिसने इस यात्रा की मुश्किलों को देखकर उस क्रोस को ही काटना चालू किया। वो प्रभु प्रेम ही जिसका कम होते गया, उसके लिये यह यात्रा बहुत कठिन है और वो अंत में उस मंजिल तक पहुंच भी नहीं सकेगा क्योंकि यात्रा में निरंतर व्यवधान डालने वाली माया है पग-पग फूंककर रखना हैं। निरंतर कोई न कोई समस्या, निरंतर कोई न कोई विकार का आक्रमण, क्या हम करें? जिससे इस यात्रा को हम सहजता से पार कर जायें और उस राज्य में पहुंच जायें जो हमारे जीवन का लक्ष्य है। हर एक अपने ही जीवन को देंखे कि जबसे हम ब्राह्मण बने हैं। हमनें कौन-कौन सी यात्राएं पार की हैं। 2-3 दिन पहले हम सुबह योग कर रहे थे पाण्डव भवन कुटिया में, एक दृश्य हमने देखा कि हमने अपने व्यक्तिगत जीवन में कौन-कौन सी यात्राएं की हैं। ब्रह्मचर्य की यात्रा क्या बाधाएं आई?, तीव्र पुरूषार्थ की यात्रा, क्या बाधाएं आई? शरीर की यात्रा कौन-कौन सी बीमारियां आई? व्यवसाय की यात्रा, मेडिकल प्रोफेसन की यात्रा, कैसा रहा ये सफर? संबंधों की यात्रा जब से ब्राह्मण बने। संबंध कैसे रहे? अमृतवेले की यात्रा, कैसा रहा अमृतवेला? मुरली चिंतन की यात्रा क्लासिस की यात्रा, **सब कुछ करते हुए साक्षी भाव कितना रहा? चाहे एकांत में है या हजारों के सामने।** स्थिति में कौन सी सूक्ष्म हलचल है? वो यात्रा, मौसम के परिवर्तन की यात्रा, मौसम के परिवर्तन के साथ मन में क्या हुआ? वो यात्रा। हर एक ने लंबी यात्राएं की है, जो सेंटरों पर रहते हैं - टीचर जीवन की यात्रा, जो जॉब करते हैं-उस जॉब की यात्रा, जो घर गृहस्थी में रहते हैं - वैवाहिक जीवन की यात्रा, व्यवसायिक जीवन की यात्रा, मधुबन में रहने वाले मधुबन के जीवन की यात्रा कैसी रही? कितने अचल अडोल रहे? उस यात्रा में। क्योंकि माया निरंतर कुछ न कुछ नया रूप धारण करके आ रही है और एक सूक्ष्म बात जो हमें लगा जैसे आज ही सुबह - सुबह समझ में आई वो ये - कि हमेशा हमने यह कहा है कि माया से युद्ध करना है, माया को परास्त करना है, माया को जीतना है, माया को पार करना है, माया के वश नहीं होना है, माया से प्रभावित नहीं होना है और एक सूक्ष्म बात जितना हमको माया ने सिखाया, शायद ही किसी और ने सिखाया। माया हमारी बहुत बड़ी टीचर भी

तो है, जब-जब हार हुई, जब-जब कोई विकार आया, जब-जब कोई कमजोरी आई, जब-जब किसी पुराने संस्कार ने आक्रमण किया, वो संस्कार क्यों आया, कहां से आया अगर हम ये सोचें तो वो माया हमारे लिये बहुत बड़ा एक टीचर है। जैसे अभी-अभी मुरली चली यहीं पर बाबा ने कहा- दरबाजा बंद कर दो, आह्वान न करो। तुम्ही आह्वान करते हो अगर एक भी दरवाजा चालू है, एक भी। डायमण्ड हॉल- 48 doors है यहां और 102 खिडकियां। सारी खिडकियां बंद है, एक ही खिडकी चालू है और बाहर तूफान है, उस एक खिडकी से वो तूफान अंदर आ जायेगा। सारे दरवाजे बंद है, सिर्फ एक ही दरवाजा खुला है, एक खुले दरवाजे से तूफान अंदर आ जायेगा। हर दिन स्वयं को देखना है। कौन सा दरवाजा चालू है? एकांत में कौन सी माया है? संगठन में कौन सी माया है? अमृतवेला कौन सी माया? मुरली में कौन सी माया है? किस समय कौन सी माया आकर घेरती है? और वो आती है क्यों आती है? और क्या पाठ पढाने आती है? उस पार्ट को सूक्ष्मता से समझना है और आगे बढ़ना है। तो माया तो निरंतर हमें कॉल करती ही रहती है, हम फोन नहीं उठाते, तो मैसेज भी भेजती है। हर तरह से कुछ न कुछ प्रयत्न करती रहती है। पर जब-जब माया कॉल करे, **हम इतने व्यस्त हो जाये, इतने व्यस्त हो जाये, इतने व्यस्त हो जाये कि उसके कानों में एक ही आवाज सुनाई दें, कौन सा? इस रूट की सभी लाइनें व्यस्त है कृपया थोडी देर बाद कॉल करें, डाइल करें।** इतना अपने आपको बिजी कर देना है, इतना अपने आपको व्यस्त कर देना है कि माया कितना भी कॉल करते रहे, कितना भी हमको बुलाती रहे, पुकारती रहे, हर प्रकार से हमारे पास आने का प्रयत्न करती रहे परंतु वो आ न पाए, पहुंच ही ना पाये। स्वामी दयानंद सरस्वती को किसी ने पूछा, आप ब्रह्मचारी हो, एकांकी हो, अकेले रहते हो। क्या काम विकार, क्या माया आपको परेशान नहीं करती? क्या विकार आपके पास नहीं आते? उन्होंने कहा हां आता है, रोज आता है, रोज ही आता है परंतु मैं अपने कमरे में अंदर रहता हूं, लिखते रहता हूँ, पढते रहता हूं, कुछ न कुछ करते रहता हूं, कितने कार्य करना है, विश्व कल्याण का कार्य बाकी पडा है। माया आती है बाहर रूकती है, ठक-ठक करती है, दस्तक देती है पर जब देखती है कि मैं व्यस्त हूं तो अपने आप चली जाती है। तो उसको आने दो, कितना भी उसको कॉल करने दो पर हम निरंतर व्यस्त रहे, ताकि उसके कानों में वो सुन-सुन कर, सुन-सुन कर वो कॉल करना ही बंद कर दें। क्या सुन-सुन कर? **इस रूट की सभी लाइनें व्यस्त है कृपया थोडी देर बाद कॉल करें, डाइल करें और हमें व्यस्त रहना है, केवल एक चीज में, केवल और केवल एक चीज में– प्रभु प्रेम में।** इतना स्वयं को ईश्वरीय प्रेम में डुबो देना है कि उस प्रभु प्रेम में ऐसे खो जायें, ऐसे डूब जाये कि और कोई संसार की बात याद ही न रहे। क्या करें? जो इतना डूब जायें इस प्रभु प्रेम में। क्योंकि जो खाली दिमाग है वो क्या करता है? आकर्षित होता है, उपद्रव करता है, अंधा हो जाता है, दिशाहीन हो जाता है, आलस्य आ जाता है, अलबेलापन घेर लेता है, डिस्टर्ब होता है। झरमुई-झगमुई में चले जाता है, व्यर्थ चर्चायें करता है, परंतु जो व्यस्त है, जिसके सामने लक्ष्य है, जिसे कुछ करना है, जिसे कुछ पाना है वो कभी भी यहां वहां नहीं भटकेगा। अपने ही जीवन का कोई एक दिन ले लो, सुबह-सुबह जब हमनें पहला संकल्प किया, कि मैं आत्मा हूं शरीर नहीं, और जिस दिन कोई भी संकल्प नहीं किया ऐसा खास, वो दिन कैसा बीता। जिस दिन कोई लक्ष्य था सुबह सुबह कि आज शाम तक मुझे अपने योग का चार्ट सबसे

ज्यादा कर देना है। वो दिन कैसा था और जिस दिन कोई लक्ष्य नहीं था, उठे अमृतवेला किया, मुरली सुनी और निकल पड़े परंतु रूटीन था केवल कोई भी लक्ष्य नहीं था।

और जब लक्ष्य नहीं अचानक विकार आक्रमण करते हैं, अचानक आ जाते हैं। इसके लिये अपने आपको खाली बिल्कुल नहीं छोड़ना है। ब्राह्मण आत्माओं को विकारों का कोई आकर्षण नहीं है परंतु ब्राह्मण मन जब खाली हो जाता है, **फुर्सत ही सभी विकारों की जड है। उस खालीपन में बैचेनी होती है, उस खालीपन में डिजीटल अट्रैक्शन होते है और खींचते हैं और पागल कर देते है।** पंचतंत्र में दिखाया है एक मंदिर का कार्य चालू है, एक बंदर देख रहा है, खाली बैठा है उसके पास कुछ काम नहीं। बंदर देख रहा है क्या कर रहे हैं ये लोग। मंदिर के कार्य के लिये बडी सी लकडी है जो रखी हुई है और कार्य करने वालों को लगा कि अभी हमें थोडा आराम करना हैं। वो बाजू में भोजन करने बैठ जाते, तब तक एक मुहडा जैसा कुछ लगा देते हैं वहां। बंदर को सूझता है वहां कुछ करूं जाकर, खाली है क्या करूं? कुछ तो करना चाहिए। वो जाता है और वो बड़ी से लकडी जो होती है उसके नीचे जो पत्थर रखा हुआ होता, उसको हटा देता है और जैसे ही हटाता है, इतनी भारी वो लकडी, लॉक ऑफ वुड, वो लुढक-लुढक कर आता है और उसे कुचल देता है और मार देता है। छोटी सी कहानी है बच्चों की पंचतंत्र की। खाली मन जो है उपद्रव करता है। जो कभी सोचा नहीं था, ऐसे भी कर्म कर बैठता है, जो कभी देखा नहीं था वो देखने के लिये लालायित हो जाता है, जो कभी किया नहीं था वो सब करने लगता है। जैसे एक रास्ता है, होश में हम चल रहे है, बीच में कोई गुफा आ गई, बेहोशी में उस गुफा के अंदर क्या किया, पता नहीं परंतु जब बाहर आते तब पता चलता है कि वो तो सारी बेहोशी थी, पर कर्म तो हो गया। इसलिए अपने आपको व्यस्त कर देना है। सारी सेवायें करते हुए मन व्यस्त हो और जैसे हमने कहां एक ही काम में व्यस्त करना है, इतना डुबो देना है उसको, इतना लगा देना है और वो कार्य है परमात्म प्रेम । और **इस परमात्म प्रेम की 16 परिभाषाएं हैं। बाबा से प्यार करना अर्थात् 16 बातों से प्यार करना।** उसमें से एक भी अगर कम हैं तो शायद हमारा प्यार उससे कम है। अभी-अभी बाबा आये थे, मुरली चली- आज बापदादा किसको देख रहे हैं? अति लाडले, अति सिकीलधे और परमात्म प्रेम के पात्र बच्चों को देख रहे हैं। यह प्रेम कैसा है? अथाह है, एक शब्द प्रयोग किया बाबा ने '**अथाह**'। दूसरा शब्द था - **गहरा** है। तीसरा शब्द था -**अलौकिक** साथी बनाने का लक्ष्य है, 7 जन्म साथ रहेंगे, साथ चलेंगे। शिवरात्रि में संसार में तीन बातें होती है, जिसकी हमेशा बाबा चर्चा करते, इस बार 2 बातों की चर्चा की व्रत, जागरण, बलि । कौन सा व्रत? कौन सा जागरण? और कौन सी बलि? स्वयं की सोचना है, चिंतन करना है। तो प्रभु प्रेम में अपने मन को इतना व्यस्त कर देना है, इतना बिजी कर देना है, इतना बिजी कर देना है। बाहर से सब कुछ कर रहे, चाहे सेवाकेन्द्र पर रह रहे, चाहे मधुबन में रह रहे, चाहे घर-गृहस्थ में है, चाहे जॉब कर रहे या नहीं कर रहें, कहीं पर कोई भी आत्मा हो इस संसार की इस ब्राह्मण संसार की। अपने आपको प्रभु प्रेम में इतना व्यस्त कर देना है कि माया आ ही न सके। तो ऐसी **16 परिभाषाएं** हम देखेंगे। बाप से प्यार की।

1. पहली परिभाषा - बाबा से प्यार अर्थात उसकी मुरली से प्यार- उसकी वाणी से प्यार, उसके शब्दों से प्यार, उसके एक-एक वर्सन से प्यार, उसके एक-एक स्टेटमेंट से प्यार। अपने आपको मुरली चिंतन में डुबो देना हैं और मुरली चिंतन में भी जो सबसे ज्यादा जो सबसे ज्यादा मन को एकाग्र कर देता है वो है रिकॉल (Recall) , याद करना। कल की मुरली में क्या कहा था? याद करने की कोशिश करना। अभी-अभी जो मुरली चली उसमें क्या कहा था बाबा ने? याद करने की कोशिश करना। एकांत में जाना, एकांत में बैठना और क्या सुना? उसको रिकॉल करना। रिकॉल एक ऐसी चीज है कि याद करते जाओ, जो पढा है, या जो सुना है, तुरंत मन एकाग्र हो जायेगा। जैसे अभी-अभी यहां बैठे है, जैसे ही ये क्लास पूरी होगी। या कोई भी क्लास पूरी होती है, जो हम खुद करते हैं सुना, क्लास बंद, किताब बंद, अब क्या पढा या क्या सुना उसको याद करने की कोशिश। **हम पढते ज्यादा है, रिकॉल कम करते हैं।** रिकॉल को बढाना है और जब ब्रेन ब्लॉक हो जाये, कुछ भी याद नहीं आ रहा। फिर से जाकर पढना है। प्रभु प्रेम अर्थात् मुरली से प्यार, बाप से प्यार अर्थात् सबसे पहली परिभाषा मुरली से प्यार, बस इसी में बिजी रहो। सुबह जो मुरली चली, कई सालों से मुरलियां सुन रहे हैं, कई सालों से मुरलियां लिख रहे हैं, परंतु कितना हमनें जाना है, कितना हमने समझा है, कितनी गहराई को हमने छुआ है। अंग्रेजी में कहते हैं विज्ञान के लिये- मेन हेज जस्ट क्रेच द सरफेस ऑफ साइंस । मनुष्य ने सिर्फ अभी खरौंचा हैं विज्ञान को अभी पूरा जाना ही नहीं, वैसे शायद हमने भी मुरली को तो बस ऊपर ऊपर से जाना है उसकी गहराई को तो पहचाना ही नहीं है अभी तक। कितनी गहराई है उसमें, एक-एक शब्द जो बाबा कह रहा है। लास्ट संडे मुरली चली थी निश्चयबुद्धि पर । एक है जानने वाले, एक है मानने वाले, तीसरे है चलने वाले। इसी के कारण है अंतर है, फिर भी नंबरवार है, फिर भी 800, 1600 है, फिर भी पूजन, गायन योग्य है कुछ है, कुछ का पूजन गायन दूसरा है। तो सबसे पहला काम जो करना है। कोई कितना भी कहे कि मेरा बाबा से बहुत प्यार है। परंतु रोज की मुरली का चिंतन नहीं हो रहा है, अध्ययन नहीं हो रहा है, मनन नहीं हो रहा है। तो वो प्रभु प्रेम नहीं है। हमारी स्थिति शायद उस यहूदा जैसी है वो क्रोस तो लेकर चल रहा है लेकिन मन में बंद की स्थिति है। मन में सोच रहा है कि कब तक वही, वही, वही। वहीं दिनचर्या, वहीं सबकुछ, वहीं क्यूं? क्योंकि नवीनता नहीं है और **नवीनता न होने का कारण है चिंतन की कमी।** ज्ञान का इतना बड़ा खजाना हमारे पास है क्या हम कर रहे हैं उस मुरली के साथ? कितनी उसकी गहराई में जा रहे हैं? **और मुरली चिंतन के लिये 3 चीजों की आवश्यकता है।**

1. मौन

2. एकांत

3.अंतर्मुखता।

चाहे कोई कितना भी व्यस्त हो, मौन को चुराना है। चाहे कोई कितना भी व्यस्त हो-एकांत को चुराना है और अंतर्मुखी हो जाना है और गहराई में जाना हैं। जीवन में जो प्रश्न है, जो समस्यायें है, जो बांते हैं, जो मुश्किलें है उनके बारे में सोचकर उनका कभी उत्तर नहीं मिलेगा। वहां से मन को डिटैच कर देना और एक दूसरे अनुपम चिंतन में मन को लगा देना। अचानक उत्तर आ जायेगा। विज्ञान के जगत में दो बार नोबल पुरूस्कार प्राप्त की हुई एक महिला है - मैडम क्यूरी। उसके जीवन में दिखाया है, बैठी है एक प्रश्न का उत्तर ढूंढ रही है, फिजिक्स का, भौतिकी का, उत्तर नहीं मिल रहा है उसे, दिन भर खोज रही है, चिंतन कर रही है, मनन कर रही है और करते-करते रात हो गई, नींद आ गई, सो गई। सुबह उठकर देखा तो उसकी जो डायरी थी उस पर वो उत्तर लिखा था उसने देखा, ये किसने लिखा? देखा तो उसी की हेंड राइटिंग थी। उसी के हस्ताक्षर, कैसे? आधी रात को वो उठ गई जैसे। क्योंकि दिन भर सोच रही थी, सोचते-सोचते सो गई, जब मन सोच से डिटैच हो गया। अचानक अवचेतन मन से उत्तर आया। आधी रात को उठी उत्तर लिखा और सो गई, दूसरे दिन देखा तो उत्तर लिखा हुआ था। कहां से आया? चेतन से नहीं अवचेतन से। चेतन जब शांत हो जाता अवचेतन एक्टिवेट हो जाता है। इसके लिये उसी प्रश्न के बारे में सोचते रहना, सोचते रहना, नहीं निकलता है। उस चेतन को शांत कर दो और अवचेतन को जगाओ। चिंतन की धारा ही परिवर्तन कर दो। अचानक उत्तर आ जायेगा **इसीलिये हर मुरली में सभी उत्तरों का सागर है। सभी समाधान का सागर है परंतु उसकी गहराई में शायद नहीं पहुंचे।** भगवान के महावाक्य है तुम अगर ऊपर-ऊपर तैरते हो तो मछलियां हाथ में आयेंगी गहरे जाओगे तब मोती मिलेंगे **पर गहराई के लिये कीमत चुकानी होंगी और कीमत है मौन, कीमत है एकांत , कीमत है अंतर्मुखता।** जितना समय व्यर्थ बांतों में जा रहा है उतना ही समय अगर हमारा मुरली के अध्ययन में चला जाये तो कितना अच्छा होगा। अभी अभी जो मुरली सुनी थी कितने भाई बहनें ऐसे हैं जिन्होंने वो मुरली पढी या अध्ययन की, 2007 की। कितने हैं? हाथ खडा करेंगे। बहुत बडी मुरली है वैसे तो थोडी यहां सुनाई गई, आये हम यहां थे भगवान से मिलने और उसकी मुरली सुनने। मुरली सुनी और हमने आगे क्या किया? इसलिए प्रभु प्रेम अर्थात् उसकी मुरली से प्यार। केवल डायरियों में लिखना, नोटस बनाना नहीं। मनन करना, रिकॉल करना, याद करने की कोशिश करना, उसको स्वरूप में लाना, उसको देखना, उसको विजुयोलाइज करना, रिलेट करना साकार को अव्यक्त से, अव्यक्त को साकार से। यह काम हर एक को करना है। **जब मुरली पढते रहोगे, माया कॉल करती रहेगी, उसको एक ही आवाज सुनाई देगी, कौन सी? इस रूट की सभी लाइनें व्यस्त हैं।**

2. दूसरी परिभाषा- बाप से प्यार अर्थात् उसके सिखाए हुए राजयोग से प्यार- दूसरी परिभाषा है परमात्म प्रेम की उसने जो राजयोग सिखाया है, उसने जो विधि सिखाई है, उस राजयोग से प्यार, कितना हमारा योग से प्यार है। कितना हमको लगता है कि हमारा कल का अमृतवेला ऐसा हो जाये जो आज तक कभी नहीं हुआ। सुबह सुबह उठकर जब सारा संसार

सोया है ऐसे डेड साइलेंस में उठकर बैठ जाना और शरीर से डिटैच हो जाना। अब तक जन्म-जन्म इंद्रिय सुखों को भोगा है। अतीन्द्रिय सुख का हमने कितना अनुभव किया है। चाहे कितने भी समय से इस ज्ञान में है परंतु अतीन्द्रिय सुख हमने कितना लिया उसका अगर हम फिगर निकाले तो शायद बहुत कम घण्टे होंगे। इतने सालों में पता नहीं कितने घण्टे होंगे, कुछ क्षण

कभी कभी। **अमृतवेला जिसका बहुत शक्तिशाली है, उसका दिन स्वतः ही शक्तिशाली है। जिसका अमृतवेला कमजोर है सारा दिन ही कमजोर है।** इसके लिये इस बाबा मिलन में जो आये हो। एक चीज आज यहां से ले जानी है। लिटरेचर डिपार्टमेंट में एक बुक है अमृतवेला। जिन्होंने पढी है, वह फिर से पढे। जिन्होंने नहीं पढी है वो कल से पढना चालू करेंगे और पढ़ेंगे दिन में दो बार – एक सुबह एक रात। क्योंकि जो करना है उसको पहले सीखना होगा। उसमें क्या क्या समस्या है, कौन सी कौन सी बाधाएं है, क्यों हम नहीं उठ पाते और उठ भी पाते तो एक दिन इतने बजे दूसरे दिन कुछ और बजे। एकाग्रता क्यों नहीं है? उसमें कंसिस्टेंसी क्यों नहीं है? निरंतरता क्यों नहीं है? **योग आनंद बन जाये, रस बन जाये योग।** सुबह-सुबह मुह में पानी आ जाये आहाहाहा, माउथ वाटरिंग, कि आज भगवान से मिलन होगा। आज हम इस शरीर की दुनिया से अलग हो जायेंगे और शरीर की दुनिया से पार उस प्रभु प्रेम की दुनिया में जायेंगे। अपने योग के चार्ट को हर दिन बढाना है, चलते-फिरते, उठते-बैठते, खाते-पीते, वो तो है ही। उस दिन बाबा ने कहा कि तुम्हें केवल बैठकर ही नही करना है। कुछ दिन बाद आ जायेगा कि तुमको बैठकर भी करना है। जब बैठा हुआ पॉवरफुल होगा तो चलता फिरता अपने आप होगा। अगर बैठा हुआ है ही नहीं, तो फिर क्या करेंगे इसके लिये बैठने की भी तपस्या है, बैठने की भी आदत है। वो अगर अच्छी है तो दिन भर चलते फिरते भी होगा। इसके लिये वो भी एक साधना है। भक्ति मार्ग में कहते एक ही आसन में तीन घण्टे बैठना अर्थात् आसनजयी बनना। स्वयं को साधना में लगाना है। लक्ष्य देना है स्वयं को बैठना ही है। तो अपने आप आदत पडेगी, हर बात की आदत है। मन को आदत है, शरीर को आदत है, शरीर को आदत है, कुछ न कुछ हाथ हिलाते रहते हैं क्यों? और सबने ये देखा होगा जो संदली पर बैठकर योग कराते हैं वह बिल्कुल नहीं हिलते पर वो ही अगर सामने बैठ जाये तो शायद हिलते हैं क्यों? क्योंकि यहां पर भान है सारी दुनिया मुझे देख रही है। हमेशा सोचो अभी-अभी जो मुरली चली, बाबा ने कहा तुम अकेले नहीं हो तुम्हारे पीछे रॉयल फैमिली है। रॉयल प्रजा है और भक्त है, सतो, रजो, तमो तीनों। और जब भी कोई समय आये जीवन का इस दिन को, इस समय को और इस संगठन के इस चित्र को याद करना। अभी-अभी मुरली में कहा ना। अपने आपको स्थिर कर देना। ये वैसे चलता फिरता योग है, उठते बैठते, खाते पीते हर समय याद करना पर जब हम योग में बैठे इतना स्थिर हो जायें उंगली भी न हिले, जिव्हा भी निश्चेष्ट हो जाये। जब यह शरीर स्थिर होगा, आत्मा स्वतः ही स्थिर होगी। एक हो जायेगी उसके साथ, योग में आनंद आयेगा और यह जब दिन में सुबह हो जायेगा। तो सारे दिन में चाहे कितने भी व्यस्त है। कितना भी सेवाओं में लगे हुये हैं। परंतु निरंतर तार ऊपर जुडी हुई होगी और जब हमारी तार ऊपर जुडी होगी **माया हमें कितना भी कॉल करें उसे सिर्फ एक ही आवाज सुनाई देगी कौन-सी? इस रूट की सभी लाइनें व्यस्त हैं। इस रूट**

की सभी लाइनें व्यस्त है तो बाप से प्यार अर्थात् योग से प्यार, राजयोग से प्यार, उसकी गहराई में जाना। कई लोग पूछते हैं, हमको सिखाओ कैसे योग करना? और हम हमेशा एक ही उत्तर देते है योग कोई सिखाता नहीं है। हर व्यक्ति योग अपने अनुभवों से ही सीखता है। जो कल हमनें योग की गहराई को छुआ, आज कौन सी गहराई को छुआ? कल जो अनुभव हुआ, आज कैसा अनुभव हुआ? क्या हर दिन अनुभव बढ रहा है? **अनुभव के लालची बनना है। और आगे, और आगे, और आगे रूकना नहीं है।** कि बहुत अनुभव कर लिया, हमनें तो यहां लाइट, वहां लाइट, इधर लाइट, उधर लाइट । इधर ब्रह्मा , इधर वो, इधर स्वर्ग। कुछ नहीं देखा। देखना तो है ही नहीं कुछ। अनुभव करना है। सूफी संत से पूछा गया था आध्यात्म क्या है उसने कहा आध्यात्म अर्थात् और आगे, और आगे अब तक जो भी पाया जो भी अनुभव किये हैं, वो तो बस मील के पत्थर मात्र हैं। अभी तो बहुत सारे अनुभव पाना बाकी है। अभी तो हमने कुछ भी अनुभव नहीं किया। मुरलियों में कहते बाबा- तुम अभी बेबीज हो। कुछ नहीं जानते। अभी करेंगे। अभी पायेंगे। **कल का अमृतवेला ऐसा होगा जो आज तक कभी हुआ नहीं।** समय को भी बढ़ाना है। उसकी क्वालिटी को भी बढाना है। एकाग्रता को भी बढ़ाना है, शरीर की स्थिरता को भी बढ़ाना है, उसके प्रेम को भी बढ़ाना है। उसमें डूबने के अनुभव को भी बढ़ाना है, अशरीरीपन को भी बढ़ाना है, साक्षी को भी बढ़ाना है। सारी चीजें उसमें पड जाये। ऐसा प्रभु प्रेम।

3. तीसरी परिभाषा- बाप से प्यार अर्थात् उसकी दी हुई सेवा से प्यार। भोपाल ग्रुप से मुलाकात- वीआईपी लाओ, वारिस लाओ। वारिस हैं पर ऐसा हो नहीं सकता है और वो छिपा है। यह तो तब कहां हआ है। हमारा यह जीवन सेवाओं के लिये हैं। और **जिस दिन सूक्ष्म में मन में व्यर्थ है उस दिन सेवायें प्रभावित** होंगी। सूक्ष्म में मन में अपवित्रता है, सेवाओं पर असर पड़ेगा। सूक्ष्म में मन में आलस्य है सेवाओं पर प्रभाव पडेगा। हर आत्मा से निरंतर 24 घण्टे बाइब्रेशन्स निकल रहे हैं कुछ न कुछ। **हम एकांत में जब कमरे में बंद हैं, दरवाजे खिडकियां बंद है उस समय क्या कर रहे हैं? वो हमारा चरित्र हैं।** सेवाओं में अपना जीवन दिया है। उससे प्यार अर्थात् उसकी सेवाओं से प्यार | बाबा ने कहा बहानेवाजी नहीं। महारथी ऐसा करता है। **वो जब गलती पर है तो क्या वो महारथी है।** तो स्वयं को धोखा दे रहे हो, उसका नाम लेकर। कोई भी बहाना नहीं। किसी भी तरह का बहाना नहीं। अपने आपको तैयार करना है, सेवाओं के लिये कि मेरा यह जीवन सेवार्थ है, और एक सूक्ष्म बात बता रहे हैं सेवाओं के लिये अगर **ब्राह्मण** जीवन में कुछ विकर्म हुये हैं, पाप हुये हैं, तो सेवा पुण्य का खाता बढा भी रही है, और सेवा पश्चाताप का एक साधन है। सेवा ही पश्चाताप हैं क्योंकि ऐसे बहुत से सूक्ष्म पाप हुये है **ब्राह्मण** बनने के बाद भी, उसका क्या करेंगे। ऐसी कितनी सूक्ष्म श्रीमत की अवहेलना हुई है। उल्लंघन हुआ है। सेवा करने की इच्छा नहीं है, उदास है, दुःखी है, किसी कारण से, उस समय यह सोचना , मुझे सेवा करनी है। सेवा ही उमंग उत्साह दिलाने का साधन भी है, सेवा ही पश्चाताप भी है। सेवा से ही आत्माओं का कल्याण भी होगा, सेवा से दुआयें भी मिलेंगी। और सेवा से ही मन का जो बोझ

है, मन के मौसम का जो वायुमण्डल है। मन के मौसम का वायुमण्डल बदलेगा- भगवानुवाच। नई नई सेवायें, एक ही सेवा नहीं, हर दिन नई नई सेवायें, हर दिन नवीन नवीन प्लॉन और वो सारे प्लॉन टच होंगे अमृतवेला। इसलिए बार बार कह रहे हैं जिसका अमृतवेला शक्तिशाली है। उसका सबकुछ शक्तिशाली हो जायेगा, उसका ब्रह्मचर्य भी शक्तिशाली, उसकी सेवायें भी शक्तिशाली। उसकी स्थिति भी शक्तिशाली। सबकुछ शक्तिशाली। सेवाओं में स्थिति ही डगमग होती है। भगवान के महावाक्य है – सेवाओं में वैराग्य नष्ट हो जाता है अगर वो सेवा वैसी नहीं कर रहे हो जैसे बाप बता रहे हैं। सेवाओं में ही आत्मायें दुःखी भी हो जाती। अभी अभी मुरली चली शांतिवन, तीन बातें बताई - दृढ संकल्प, संस्कारों की टक्कर, स्वभाव में मतभेद और कमजोरी। कमजोरी कौन सी? उसने झूठ बोला हमने तो नहीं किया। इसलिए क्रोध आ रहा है, बाबा ने कहा सारी दुनिया एक तरफ सारा झूठ एक तरफ। तुम्हारे पास बाप है, बाप से वैरीफाई कर लिया बस और कछ करने की जरूरत नहीं विजय तुम्हारी निश्चित है। तो बाप से प्यार अर्थात् सेवाओं से प्यार। इतना सेवाओं में लगे रहो, सुबह से लेकर रात तक कोई फुरसत का समय ही न हो। दिन रात जो सेवाओं में है, माया कहां से आयेगी उनके पास। बाबा ने कहा गॉड का लॉक, गोदरेज का नहीं। सेवा, सेवा, सेवा। हर दिन सुबह अमृतवेला पूरा हुआ। प्लानिंग करो आज किस की सेवा करनी है। चार्ट निकालो अपने शहर का सारा मैप निकालो, कौन सा मेडिकल कॉलेज, कौन सा इंजीनियरिंग कॉलेज, कौन सा आई टी कंपनी, कौन सी जगह जहां पर अब तक हम गये नहीं है। अब तक पहुंचे नहीं है। वो कौन सा स्थान है, वो कौन से लोग है। कैलेण्डर निकालो। इंटरनेट पर जाओ। आज इस मास में कौन कौन से दिन है डॉक्टर्स डे, हेल्थ डे, वर्कर्स डे, लेबर डे, जो-जो डे है। उसको एक प्रोग्राम और सेवाकेन्द्र पर उनको आमंत्रित किया जा सकता है। नई नई आइडियाज सेवा की और जब हम सेवा में बहुत ज्यादा व्यस्त है। माया उधर से कॉल करेगी मैं आउ क्या? परंतु उसे बस एक ही आवाज सुनाई दे कौन सी? इस रूट की सभी लाइनें व्यस्त है। व्यर्थ के लिये टाइम ही नहीं। झरमुई झगमुई के लिये टाइम नहीं है। वो क्या करता है, यह क्या करता है, उसने क्या किया, इसने क्या किया। इस डिपार्टमेंट में क्या होता, उस डिपार्टमेंट में क्या होता। इस सेवाकेन्द्र में ऐसा क्यों, उस सेवाकेन्द्र में ऐसा क्यों। माइंड यूर ऑन बिजनेस (Mind Your Own Business) । तुम्हें इससे क्या? अपनी मस्ती में मस्त रहेंगे। ये सभी चीजों में हमें जाना ही नहीं है।

4. चौथी परिभाषा - परमात्म प्रेम अर्थात मधुबन से प्यार ये जो मधुबन भूमि है, इस भूमि से प्यार। ये चरित्र भूमि है ब्रह्मा की, ये वरदान भूमि है, परमात्म अवतरण भूमि है, ये मधुर भूमि है। ये कर्म भूमि है, कर्मातीत भूमि है ब्रह्मा की। इस भूमि से प्यार | अथाह प्यार | इसलिए जहां भी हम रहते हैं, सेवाकेन्द्र या घर 24 घण्टे में कम से कम दो बार मधुबन का चक्कर लगाना हैं, मधुबन की परिक्रमा, शांतिस्तम्भ की परिक्रमा, हिस्ट्री हॉल में आना, बाबा के कमरे में आना, कुटिया में आना और वहां से होने के बाद डायमण्ड हॉल में भी आ जाना। बाबा ने कहा न ये दिन, ये समय, ये संगठन का चित्र याद करो कि हम

बैठे थे और यहां पर हमनें प्रतिज्ञा की थी पवित्रता के व्रत की। यहां पर बैठकर हमने प्रतिज्ञा की थी सम्पूर्ण जागरण की, आलस्य, अलबेलापन, बहानेबाजी। वो कौन सा समय था, वो कौन से लोग थे, जिनके बीच में मैंने यह प्रतिज्ञा की थी। पवित्रता अर्थात् केवल ब्रह्मचर्य नहीं, ब्रह्माचर्य । इस मधुबन से प्यार, इस भूमि से प्यार, इसके कण-कण से प्यार। धन्य भूमि बन पंथ पगारा, जहां जहां नाथ पांव तुम धारा। यहां पर पैर रखे उसने इस भूमि पर इस भूमि से कितना प्यार होना चाहिए। बाईबिल की कहानी है, ईसामसीह जाता है और देखता है भगवान का जहां मंदिर है, जहां घर है वहां पर लोग जुआं खेल रहे हैं, वस्तुएं बेच रहे, खरीद खरीद भरोक्त हो रही है। वो एक चाबुक लेता हैं और सबको मारने लगता है, कहता है हटो यहां से, हटो यहां से, चले जाओ यहां से। तुमने मेरे भगवान के घर को यह क्या बना रखा है। सबको हटाता है और वो एक चीज कहता है जो बडी स्ट्रोंग है, वो कहता है- माय लव फॉर दिस हाउस ऑफ गॉड बर्नस लाइक अ फायर : **प्रभु के इस घर के लिये मेरे अंदर जो प्रेम है वो आग की तरह है आग की तरह है।** वैसा ही आग की तरह प्रेम इस भूमि के लिये हो, यहां आकर ये देखने में नहीं लग जाओ, ये क्यों, वो क्यों, वो क्यों, वो क्यों भगवान इस सृष्टि का, इस मधुबन का रचयिता है, उसे तो सबकुछ पता है और उसके मुख से मधुबन के लिये कैसी महिमा निकली है। शुद्ध संस्कृति का यह द्वीप है। संसार टापू है, सुबह की साकार मुरली। उस टापू में उस लंका में यह मधुबन भगवान की नगरी है। यहां पर जो जो आत्मायें हैं, भगवान ने एक एक को चुना हैं, भगवान के चुनाव में खोट नहीं हो सकती। गॉड सिलेक्टेड, गॉड इलेक्टेड, लोग है यहां पर। भक्ति में कहते हैं न लोग जिसे चुनते हैं वो कहां जाते है? संसद में और भगवान जिन्हें चुनते हैं वह कहां जाते हैं? सत्संग में। तो वो सत्संग यह हैं तो मधुबन से प्रेम। कोने-कोने से प्रेम । मधुबन के लिये अपनी इमेज बहुत ऊंची रखना अपने मन में और जो यहां रहते हैं वो भी क्योंकि यहां रहते रहते कभी महत्व कम हो जाता है इसलिए यहां रहते हुये भी साक्षी होकर के मधुबन को देखना है, ये रचा है भगवान ने मधुबन। कितना महान है, दिव्य फरिश्तों का ये मधुबन, कितना सुंदर, कितना प्यारा मधुबन ये हमारा है तो बाप से प्यार अर्थात् उसके घर से प्यार

और अगर हम बाबा से कहां कि बाबा हमें आपसे बहुत प्यार है पर ये जो मधुबन है उससे थोडा सा कम| कितने भाई बहनें ऐसे हैं पता नहीं 3-4 साल से एक बार भी नहीं आये हैं बाबा से मिलने। सोचते हैं अब हम उधर ही मिल लेंगे। पर यहां आना,

इस संगठन में आना, इस स्थान पर आना। एक मैगनैटिक फील्ड हैं यहां पर जिस हॉल में हम बैठे है, इस हॉल में ईश्वरीय शक्तियां घूम रही हैं। अचानक जीवन के किसी प्रश्न का उत्तर मिल जायेगा। अचानक कोई टच हो जायेगी शक्ति। जन्म-जन्म से बुद्धि के कपाट जो बंद है वो खल जायेंगे एक दिन। ये यहां होगा इसलिए माया कितनी भी कॉल करती रहे हम किसमें व्यस्त रहें मधुबन के प्यार में, मधुबन की यादों में, यहां से जाने के बाद मधुबन को रोज याद करना है, यहां की भूमि को, यहां की बाइब्रेशन्स को, यहां की सेवाओं को, यहां के बेहद के कार्य को याद करना है।

5. पांचवा- बाप से प्यार अर्थात् उसके परिवार से प्यार– ये जो सारे बैठे हैं, कौन हैं? अति लाडले, अति सिकीलधे, परमात्म प्रेम के पात्र बच्चे हैं सभी। क्या इनके प्रति हमारी शुभ भावनायें हैं? उधर भूकंप हुआ योग में बैठे और सकाश दी, काम पूरा हुआ। पर इस परिवार के लिये हमने क्या किया। इस परिवार की आत्माओं के लिये हमारे मन में कुछ न कुछ है।

एक बहुत महत्वपूर्ण कार्य सबको दे रहे हैं। जो अपनी डायरी में नोट करना है जो कल से रोज करना है। चार बाते जो हरेक ब्राह्मण को अमृतवेला योग में करनी हैं -

1. आत्माओं को इमर्ज करना उनसे माफी मांगना। उन सभी आत्माओं को इस ब्राह्मण परिवार की भी और बाहर की भी जिनको हमने बहुत दुःख दिया और शायद उनसे अभी बहुत दुख मिल रहा है किसी जन्म में दुःख तो दिया न जरूर । माफी मांगो।

2. माफ करना, क्योंकि हम पूर्वज हैं महान है। इन दोनों कार्यों से भी अति महत्वपूर्ण तीसरा कार्य हैं

3. धन्यवाद देना। तुमने दुःख दिया। जो कुछ दिया परंतु उससे मेरा बहुत फायदा हुआ हिसाब चुक्तू हो गया। अनुभव मिला नया। माया का नया रूप सामने आया। माया की समझ बढ गई। इसके लिये धन्यवाद । इन तीन कार्यों से भी चौथा कार्य अति महत्वूर्ण है।

4. जिस आत्मा को हम इमर्ज कर रहे, जिन आत्माओं को हम इमर्ज कर रहे उनके प्रति अत्यंत श्रेष्ठ भाव प्रकट करने हैं मन में, कि ये जो आत्मा है इसके जीवन से विघ्न दूर हो जाये, इसकी आध्यात्मिक उन्नति हो जाये, इसका ब्रह्मचर्य अखण्ड हो जाये, इसके सारे विघ्न हट जायें, अत्यंत शुद्ध, अत्यंत पवित्र भाव उस आत्मा के लिये प्रकट करने हैं।

ये आत्मायें हमारी इंचार्ज हो सकती है, बोस हो सकती हैं, साथी हो सकती है, जूनियर हो सकते हैं, बाहर के लोग हो सकते हैं, ब्राह्मण परिवार के लोग हो सकते हैं, मधुबन निवासी हो सकते हैं, और ये काम रोज करना हैं, रोज ताकि उस आत्मा से डिटैच भी हो जाये, उस आत्मा के साथ हमारे हिसाब-किताब भी चुक्त हो जाये और जो डिटैचमेंट हमारी होगी वो पॉजिटिव वाली होगी, निगेटिव वाली नहीं होगी। जो निगेटिव वाली होती है, घृणा वाली। वो फिर से आ जाती है अटैचमेंट कुछ दिनों के बाद। पति-पत्नि लडते-झगडते हैं, पर हर लडाई के बाद प्यार बढ़ जाता हैं उनका। इसलिए लडाई करके किसी से डिटैच नहीं हो सकते, और ही अटैच हो जायेंगे। थोडे समय के लिये चलेगी वो डिटैचमेंट, नाराज हो गये किसी से हम बात ही नहीं कर रहे। लंबा समय नहीं चलेगा वो वैराग्य । अल्पकाल का वैराग्य है वो। तो बाप से प्यार अर्थात इस परिवार से प्यार, इस परिवार की हर आत्मा से प्यार। इनकी मदद करते रहना। बाबा ने कहा है 2010 की मुरली डबल फॉरेनर्स से मुलाकात। तुम्हारे जेब में क्या होना चाहिए? सहयोग के नोट । सहयोग दो। तो इतना व्यस्त हो जाओ इस ब्राह्मण परिवार में प्यार करने में, माफ करना, माफी मांगना, धन्यवाद देना। श्रेष्ठ भावनाये उत्पन्न करना। उनके लिये कठिन कार्य है फिर भी भगवान

ने कहा है। जब हम ये करने लगेंगे तो माया उधर से कितना भी कॉल पे कॉल, कॉल पे कॉल, कॉल पे कॉल करेगी **उसको बस एक ही आवाज सुनाई दे- कौन सी इस रूट की सभी लाइनें व्यस्त है।** इस रूट की सभी लाइनें व्यस्त है।

6. छठवां - बाप से प्यार अर्थात् इस यज्ञ से प्यार– यज्ञ निराकार है, यज्ञ की कोई भौगोलिक परिभाषा नहीं है कि ये यज्ञ है यज्ञ फॉरमलैस है परंतु वो हर चीज जो यज्ञ में है उससे प्यार। यज्ञ से प्यार अर्थात इसके भोजन से प्यार, इसके पेट्रोल से प्यार, इसकी लाइट, इसकी इलेक्ट्रीसिटी, इसका पानी हर चीज से प्यार। इसकी हर कमरे से प्यार | जो कमरा, कल जो भी आने वाले हैं, जैसे आये थे, वैसा ही कमरा छोड कर जाना। एक चीज भी इधर-उधर न हो, उस विस्तर पर एक सिलवट भी न हो। जैसा मिला था, वैसा ही सौंप कर जाना। हर चीज से प्यार, हर रिसोर्स से, हर साधन से प्यार, कुछ भी हमारे कारण वेस्ट न हो। कुछ भी यहां का भोजन वेस्ट न हो। हम यहां आये थे, पुण्य कमाने, जो पता है हम खाते नहीं है, थाली में ले लिया, आधा फेंक दिया। चाय भरकर ले ली, आधी छोड़ दी। आये थे पुण्य कमाने पाप लेकर जा रहे हैं। मधुबन की रोटी-रोटी तोड़ने का हिसाब देना पडेगा, क्योंकि भगवान का मधुबन है। इसलिये हमारे वजह से कुछ भी वेस्ट न हो, वैसी ही दवाईयां, रखी रहती है, एक्सपाईरी डेट हो जाती हैं फेंकनी पड़ती है। वैसे ही बहुत सारे साधन जो कुछ यज्ञ से मिल रहा है, हमारे ऊपर कम से कम वेस्ट हो। यदि बार-बार कोई बीमार पड़ता है, उसकी पूरी पालना यज्ञ से होती है, वो उसका ही दोष है। जरूर जीवनचर्या में वो अनुशासन नहीं था, जरूर वो विलास में आत्मा डूबी थी कभी न कभी वो संयम नहीं था, वो स्वयं पर नियंत्रण नहीं था, वो स्वाद लोलुप्ता थी इसीलिये यज्ञ से प्यार, अथाह प्यार, सर्वस्व समर्पण करने की तैयारी इस यज्ञ के लिये सबकुछ यह यज्ञ है और चाहे जो मधुबन में रहते या गृहस्थ में रहते, हमेशा एक बात अपने मन में दोहरानी है मेरी पालना यज्ञ से हो रही है, मेरी पालना यज्ञ से हो रही है। **चाहे पैसे कमाते हैं, सैलेरी आती है परंतु यहीं सोचना यह सब बाबा का है और बाबा मुझे दे रहा है मेरी पालना यज्ञ से हो रही है और उसके भी ऊपर एक महाभयंकर और शक्तिशाली संकल्प है और वो है मैं स्वयं ही यज्ञ हूं।** बाप से प्यार अर्थात् इस यज्ञ से प्यार।

7. सातवां- बाबा से प्यार अर्थात उसके घर से प्यार- उस परमधाम से प्यार, उस आवाज की दुनिया से परे की दुनिया से प्यार, उस मौन से प्यार, वो जो स्थान है, सितारों से प्यार । कितना समय हम वहां रहते हैं? बहुत कम । क्या वाकई में हमें उससे प्यार हैं? हमने हजारों बार सुना है घर जाना है, घर जाना है, घर जाना हैं पर क्या घर से प्यार है। वो नोस्टाइलजिया, वो होम सिकनेस कब जांउ? रोज अनुभव करना है, लंबा-लंबा समय परमधाम में टिकने का अभ्यास, लंबा समय तक परमधाम में टिकने का अभ्यास परमधाम की अलग अलग ड्रिल्स बनानी है, कि मैं जब आत्मा परमधाम में हूं, तो क्या मेरी स्थिति है? परमधाम के क्या क्या अलग अलग नाम है? एक एक नाम को लेकर उसमें स्थित होने का अभ्यास । परमधाम में वो कौन

सी बांते हैं जो यहां नहीं हैं परमधाम का मौन कैसा हैं? यहां का मौन तो पता हैं पर वहां का मौन कैसा हैं? वहां की साइलेंस, वहां की शांति, वहां की मुक्ति कैसी हैं? वहां का वायुमण्डल कैसा है? वो ब्रह्म तत्व कैसा हैं, ये 5 तत्वों का अनुभव, उस तत्व का कितना अनुभव हैं? परमधाम उसके घर से प्यार। (न तद्भाष्यते सूर्य न शशांको न पावक यदगत्वा निवर्तन्ते तद्धामम परमम मम्) हे अर्जुन वो मेरा धाम हैं। सूर्य, शशांक, पावक कुछ यहां नहीं है परंतु स्वयं-भू जो हैं, परमधाम से प्यार बढाना है।

8. आठवां – बाप से प्यार अर्थात सूक्ष्मवतन से प्यार- कितना समय हम सूक्ष्मवतन में रहते? कितना समय फरिश्ता स्थिति में रहते? फरिश्तों की दुनिया में रहते? ऐसे अनुभव करना है कि ये दुनिया ही सूक्ष्मवतन बन गई हैं। ये दुनिया ही सूक्ष्मवतन है। यहां पर सब चलते फिरते फरिश्ते । ये मत समझो यह बी.के., यह नॉन बी.के. यह शब्द हटा दो। सब आत्मायें फरिश्ते हैं और हम भी फरिश्ते हैं कितना अच्छा अभ्यास है। उस सूक्ष्म वतन से भी प्यार |

9. नौंवा – बाप से प्यार अर्थात् उसकी स्थापन की हुई राजधानी से प्यार वो जो राजधानी स्थापन कर रहा है। अभी अभी जो लास्ट सीजन की मुरली चली थी उसमें बाबा ने क्या करो? 5 सेकेण्ड, 5 मिनिट, 5 स्वरूपों का अभ्यास। रोज सतयुग में जाना है, देखना है और व्यक्तिगत रूप से हमें सतयुग की दो बांते बहुत ज्यादा अच्छी लगती हैं, वो है पवित्रता और प्रकति। बाकि सब चीजें तो बहुत हैं वहां पर, पर ये दो चीजें विशेष हैं। सम्पूर्ण पवित्रता है विकारों का कोई आकर्षण ही नहीं है। अंग अंग पवित्र हैं। इतनी शुद्धि हैं वहां पर और प्रकृति कितनी सतोप्रधान है। ये तीन तो बाप से प्यार अर्थात् इन तीनों से प्यार।

10. दसवां- बाप से प्यार अर्थात् मम्मा, बाबा से प्यार- आप से जिन्होंने भी ब्रह्मा बाबा की जीवनी नहीं पढी हैं, लिटरेचर डिपार्टमेंट से किताब लेंगे, जीवन को पलटाने वाली अद्भुत जीवन कहानी भाग-1, भाग-2| उसे पढना चालू करेंगे, क्योंकि हजार बार हमनें सुन लिया है, फॉलो फादर, फॉलो फादर, फॉलो फादर पर फादर को कहां फॉलो करना, किया क्या है उसने , उसका जीवन चरित्र क्या हैं? जब तक वो नहीं समझा जाता, उस संस्था को भी नहीं समझा जाता। अगर किसी भी संस्था को, किसी भी धर्म को समझना है तो सबसे पहले उसके धर्म स्थापक को समझना होता हैं, उसके निर्माण करने वाले जो व्यक्ति है, निमित्त उसका जीवन क्या है उसी के बाद उस संस्था को, उस चीजों को समझा जा सकता है। तो बाबा से प्यार अर्थात् बाबा से प्यार, मम्मा से प्यार, दोनों एक साथ। मम्मा की जीवन कहानी, बाबा की जीवन कहानी। यज्ञ में बहुत सारी ऑडियोज है, जिसमें बाबा के साथ के अनुभव हैं, दादियों के, जितना हमारा ट्रेवलिंग का समय है, फ्लाइट , ट्रेन, कार ।

ईयरफोन लगाओ, यज्ञ की हिस्ट्री सुनते रहो दादियों के मुख से, क्या हुआ था, कैसे हुआ था, वापिस उस कालखण्ड में पहुंच जाओ शुरूआत में क्या हुआ था, कैसे हुआ था। यज्ञ के इतिहास के कम से कम 30, 40 लेक्चर्स हैं, वो रोज सुनते रहना है, रोज तब तक, जब तक वो फीलिंग न जाये कि हम टाइम ट्रेवल, वहां न पहुंच जाये, उस कालखण्ड में दिखाई दे, जैसे अभी हो रहा हैं ये सब, तो वो फीलिंग आयेगी। नहीं तो कितना भी मुरली पढो, उसमें वो फीलिंग नहीं आती जो होती है। फीलिंग आने के लिये अनुभव करना होता है। वो सीन क्रियेट करना है, विजुलाइजेशन से जैसे हम ही उस ओम मण्डली में है। हम ही उस कमरे में है। अभी लोग विरोध कर रहे हैं, अभी ये हो रहा है देखना हैं। प्ले द पार्ट, बी द एक्टर तो वो फीलिंग आयेगी। तो बाप से प्यार अर्थात् शिव बाबा से प्यार अर्थात ब्रह्मा, मम्मा से प्यार ।

11. ग्यारहवा- बाप से प्यार अर्थात् सभी दादियों से प्यार- दादियां हमारी सामने रोल मॉडल हैं, जानकी दादी के लिये कभी बाबा ने कहा था- कि तुम विश्व की परिक्रमा करती हो और बाप तुम्हारी परिक्रमा करते हैं। संसार में शायद ही वर्तमान समय ऐसा कोई होगा विद्वान जिसको वो स्थिति प्राप्त है जो इस समय दादी को है। इस उम्र में अथक सेवाओं में लगी हैं। हमने दादी को बहुत बहुत करीब से देखा है, बहुत सारी बीमारियों में देखा है अचल, अडोल स्थिति। बहुत समय पहले की बात है, हमें याद हैं, हम कहीं दिल्ली गये थे, कांफ्रेंस में, अचानक यहां से फोन आया, दादी की तबियत ठीक नहीं है। रातभर बहुत ठीक नहीं रही। आप कहां हो? हमने कहां हम दिल्ली में है कांफ्रेंस भाईसाहब ने कहा- अभी के अभी आ जाओ छोड के आ जाओ। तो हम कांफ्रेंस सब छोडकर शांतिवन पहुंचे। तो पता चला दादी डायमण्डल हॉल की स्टेज पर क्लास चालू हैं। रात भर हलचल और यहां आकर कुछ नहीं। क्लास चालू हजारों के बीच। वण्डर हैं। हमें तो ऐसा लगता है दादी जानकी एक चैलेंज है मेडिकल प्रोफेशनल्स के लिये। भगवान ही चला रहा है ऊपर से नहीं तो संभव नहीं है। चैलेंज है चैलेंज वो सब होते हुए भी इतनी अचल अडोल स्थिति। और वो चलना। सभी दादियों के लिये प्यार | इसके लिये एक काम करना है, सभी दादियों के जीवन चरित्र के बारे में पढना है। यज्ञ में किताबें हैं, ऑडियोज हैं, उसमें बिजी रहना, इन आडियोज को सुनने में लगे रहो तो माया कितना भी कॉल करती रहे। **एक ही उत्तर मिले उसको इस रूट की सभी लाइनें व्यस्त हैं, तुम्हारी बांते सुनने के लिये हमारे पास समय नहीं है**। हम तो अपनी दादियों के जीवन चरित्र को सुन रहे, जीवन गाथा को सुन रहे है। तुम्हारे बांते क्या सुने, संसार की बांते, संसार के लोगों की बातें, वो सब सुनने के लिये हमारे पास टाइम नहीं है, हमारी बुद्धि तो इसमें लगी हुई है। अनुभव करना है, उसी कालखण्ड में पहुंच जाना है, स्वयं को देखना है, दादियां छोटी छोटी हैं, उस ग्रुप में मैं भी हूं। कितना अच्छा अनुभव होगा।

12. बारहवां- बाप से प्यार अर्थात् सभी बाबा की निमित्त टीचर बहनों से प्यार– इसको तो बहुत ध्यान से सुनना, निमित्त किसने बनाया है उनको? स्वयं भगवान ने, वो साधारण आत्मायें नहीं है, मंदिरों में जिनकी पूजा हो रही है, वो सारी टीचर्स बहनें खुद है। वो सारी देवियां यहीं टीचर बहनें हैं। इसके लिये कोई षड्यंत्र, कोई गुटबाजी, किसी भी तरह के व्यर्थ संकल्प, विकारी संकल्प, नफरत के संकल्प , घृणा के संकल्प न हो, वो महान आत्मायें है, वो संसार की वो आत्मायें हैं जिनको स्वयं भगवान ने चुनकर उन स्थानों पर रखा है। वो संसार की सर्व महान आत्मायें है, उनसे अधिक सम्मानीय आत्मायें इस संसार में कोई नहीं, उनका सारा जीवन अगर देखो, किसके लिये? अपने लिये कुछ है क्या, कुछ भी नहीं अपने लिये । सर्वस्व स्वाहा किया, अपने यौवन को न्यौछावर किया, यज्ञ की वेदिका पर। वो साधारण कैसी हो सकती है। इसके लिये उनके प्रति अपनी भावनाओं को निरंतर और हमेशा, सतत् जब तक ब्राह्मण हो तब तक। बहुत ऊंची रखनी हैं, बहुत ऊंची। शायद वो पढी, लिखी कम हो, शायद उसकी समझ कम हो, परंतु भगवान ने उसे चुना हैं। ये न भूलना। शक्ति है उसकी वो, शिव की अर्धांगिनी है वो, शिव प्रिया है वो, बालब्रह्मचारिणी है वो। इसके लिये बाप से प्यार अर्थात् सभी टीचर्स चाहे छोटी क्यों न हो कन्या, उसको कन्या नहीं समझना। पता नहीं कौन से जन्म में कौन सी तपस्या करके आई हैं। पता नहीं शायद इसी जन्म में इसी ब्राह्मण परिवार का सेकेण्ड बर्थ है। सेकेण्ड बर्थ बी.के. इसके लिये बाप से प्यार अर्थात् सभी टीचर्स से प्यार | सभी टीचर्स से प्यार |

13. तेरहवां- बाप से प्यार अर्थात उसकी मर्यादाओं से और उसकी श्रीमत से प्यार– एक - एक जो मर्यादा बाबा ने दी हैं, ये मर्यादायें कवच है, अगर इस किले के अंदर हम रहते, इस मर्यादाओं के किले के अंदर, माया कुछ नहीं कर सकेगी। जैसे ही इसके बाहर जायेंगे। रावण तो खडा हैं वहां पर पुष्पक विमान लिये और हाइजेक। ले जायेगा। अपनी मर्यादाओं को रिवाइज करना है। मधुबन की मर्यादा क्या हैं? मधुबन के जीवन की मर्यादाएं क्या हैं? समर्पित जीवन की मर्यादाएं क्या है? सेवार्थ हरेक की मर्यादा क्या है? स्टूडेन्ट की मर्यादाएं क्या है? कुमार की मर्यादाएं क्या हैं? कुमारियों की मर्यादाएं क्या हैं? माताओं की मर्यादाएं क्या हैं? अधरकुमारों की मर्यादाएं क्या हैं? ब्राह्मण जीवन की मर्यादाएं क्या हैं? और हम कितना अचल अडोल है उन मर्यादाओं पर अगर मर्यादाएं टूट रही हैं बार - बार तो माया अटैक करेगी और यदि दुख है जीवन में तो जरूर किसी न किसी श्रीमत का जरूर उल्लंघन हो रहा है, कोई न कोई श्रीमत तो जरूर टूटी है, इसलिये यह उदासी है, इसलिए यह अकेलापन है, इसलिए किसी देहधारी के साथ की आवश्यकता लगती है। ऐसा लगता है , कोई चाहिए? क्यूं चाहिए? रिवाइज करना है मर्यादाओं को|

14. चौदहवां – बाप से प्यार अर्थात् प्यूरिटी से प्यार- बाबा को सबसे ज्यादा कौन सी पसंद है? सम्पूर्ण पवित्रता। पूरी मुरली उस पर चली है? क्या कहां बाबा ने, अभी अभी ऐसा नहीं मुख्य तो को जीत लिया है पर बाकि सब चीजों से प्यार है, छोटों से प्यार है, 4 विकार । पवित्रता अर्थात् ब्रह्मचर्य नहीं ब्रह्माचारी । एक भी दरवाजा खुला न हो। अंश मात्र भी विकार न हो। अत्यंत प्योर आत्मायें बाबा को बहुत प्रिय हैं। और जब हमारे पास अंदर बहुत बड़ी पवित्रता की शक्ति है। हमारे अंदर अपने आप एकाग्रता है। एकाग्रता है अपने आप आत्म अभिमानी स्थिति है, अपने आप सारी धारणायें हो रही है। और जिस दिन मन में अपवित्रता है अपने आप कंफ्यूजन है, क्या करना क्या नहीं, समझ नहीं आयेगा। जिस दिन अपवित्रता है, उस दिन दुःख है, उस दिन विकारों का आकर्षण है, और विकारों का आकर्षण ऐसा है। एक विकार का आकर्षण दुसरे विकार को और खींचता है। **एक स्टीमुलस दूसरे स्टीमुलस को लाता है। एक देहभान की क्रिया दूसरे देहभान की क्रिया की तरफ आकर्षित करती है।** और फिर पश्चाताप, गिल्ट कांशियसनेस, अपराधभाव, ये मैंने क्या कर दिया। **आज की मुरली में है काला मुंह,** सुबह की साकार मुरली। तो ये नहीं कह सकते बाप को तो सब पता है। प्यूरिटी से प्यार । अपनी प्यूरिटी को बढाते जाना हैं हर दिन सूक्ष्म चेकिंग करते जाना हैं। आज कौन सी अपवित्रता आई? विचारों में? कल्पना में? स्मृति में? कहां आई? और क्यों आई, दृष्टि क्यों चलायमान हुई और इस सभा में यहां से जाने से पहले मधुबन से जाने के पहले, अपने इस वृत्त को दृढ करके जाना है। बाबा ने शिवरात्रि का उदाहरण दिया है? शिवरात्रि में वो लोग उपवास करते हैं, निर्जला करते हैं, अगर कोई माता निर्जला कर रही हैं, न खाना, न पीना। उसको कितना भी खिलाओ नहीं खायेगी। जबरदस्ती करो नही खायेगी, अपना वृत्त तोडती है क्या भक्ति मार्ग में कोई? वैसे प्यूरिटी भी हमारा व्रत है, वो लोग एक वर्ष, वर्ष-वर्ष करते, तुम्हारा हमेशा का यह वृत्त है। तो बाप से प्यार अर्थात् प्यूरिटी से प्यार माया कितना भी आक्रमण करें, कितना भी प्रलोभन दे दें। अनेकानेक साधन है, अपवित्रता के, ऐसे हर एक चीज देखना बंद करना है, जिससे मन में विकार उत्पन्न होता है, ऐसी हर चीज सुनना बंद करना है,जिससे मन में विकार उत्पन्न होता है, ऐसे हर संबंध हमेशा के लिये भूल जाना है, रोक देना है, समाप्त कर देना है, भस्म कर देना है, जिसमें विकार का पोटेन्शियल है। ऐसी हर अतीत की स्मृति जिसमें विकार के अंश थे, उनको विष की तरह त्याग देना है। और जब हम पवित्र संकल्प में, पवित्र बोल में, पवित्र कर्म में, पवित्र संबंध संपर्क में, पवित्र दृष्टि, पवित्र वृत्ति, पवित्र दृष्टिकोण, पवित्र आदतें, पवित्र संस्कार, पवित्र धन, पवित्र तन, पवित्र स्मृतियां, पवित्र कल्पनायें, पवित्र स्वप्न, पवित्र लिखना, पवित्र खाना, पवित्र सुनना। **जब इतनी सारी पवित्रता में हम बिजी रहेंगे तो माया कितना भी कॉल पे काल पे कॉल कॉल पे कॉल, मिस्ड कॉल पे मिस्ड काल, मैसेजिस पे मैसेजिस, व्हाट्सअप पर व्हाट्सअप, ईमेल पे ईमेल कुछ भी करे। एक ही उत्तर उसे मिलेगा कौन सा इस रूट की सभी लाइनें व्यस्त है।** अपनी पवित्रता को बढ़ाना है। इधर ही मधुबन से जाते जाते संकल्प करके जाना अब तक जो भी अपवित्रता के कर्म हये वो हो गये। बाबा से कल सुबह अमृतवेला माफी मांग लो, खत लिख लो और बस अब एक नया जन्म हुआ। ये बाबा का मिलन केवल बाबा का मिलन नहीं था, पवित्रता का मिलन था। पवित्रता का पूर्नजन्म हुआ। ऐसा संकल्प लेकर यहां से जाना है। इस भूमि से मधुबन की भूमि की माटी से

तिलक करो और जाओ यह साधारण माटी नहीं है, इस मिटटी से तिलक करके जाओ। भगवान के कदम पड़े हैं, दादियों के कदम पड़े हैं, ब्रह्मा , अव्यक्त आत्माओं के, एडवान्स पार्टी की आत्माओं के यहां कदम पड़े हैं।

15. पंद्रहवां- बाप से प्यार अर्थात् संसार की सभी आत्माओं से प्यार- किसी के प्रति घृणा नहीं, किसी के प्रति नफरत नहीं, यह ऐसा क्यों करते? यह वैसा क्यों करते? परवश हैं बिचारे, क्या करेंगे? उनके लिये कोई मार्ग भी तो नहीं है सुख का विकारों के अतिरिक्त, उनके प्रति रहमदिल। शराब पीते हैं, दु:खी हैं, क्या करेंगे, समझता हैं उनको पर छूट नहीं पाता। सारी समझ हैं परंतु कुछ नहीं कर पाते, शक्तिहीन हैं, दुर्योधन जैसी अवस्था है, कहता है हे गोविंद मुझे पता हैं, मैं जो कुछ कर रहा हूं, वह सब गलत हैं परंतु सही करने की शक्ति मेरे पास नहीं है। हमें शक्ति देनी हैं उन आत्माओं को। जिन माया से हम गुजरे हैं और बाहर निकले हैं अब उसी विधि से, उसी विधि को दूसरों को सिखाना हैं ताकि वो उसमें न फंसे। हम तो फंस गये थे, हम तो उससे निकल आये, अब दूसरों को निकालना है, इसलिये बाप से प्यार अर्थात् इस संसार की हर आत्मा से प्यार । प्रत्येक आत्मा से प्यार, कोई भी हो। ब्रह्मा बाबा के लिये कहते थे, जब ऊपर आये ब्रज कोठी में सांप आ गया, बाबा ने कहा बच्चे को दूध पिलाओ, सांप के लिये भी। ये चिडिया आई, इस बेटी को कुछ दो, उसको भी बेटी। पशु पक्षियों के लिये भी इतना प्रेम। सबके लिये, सबके लिये। इस संसार की हर आत्मा के लिये प्रेम। इसके लिये अमृतवेले सृष्टि का चक्र लगाना है, 5 खण्डों का चक्र लगाना है एक एक आत्मा को देखना हैं, 3 सत्ताओं को देखना है, उन्हें शक्तियां देनी है, पवित्रता देनी है। संसार में पवित्रता और चरित्र का अकाल पड़ा है और हमारे पास सागर है। **पवित्रता जैसी कोई शक्ति नहीं है संसार में जब अंदर पवित्रता होगी तो ही हम दूसरों को कह सकेंगे नहीं तो लज्जा आयेगी कहते समय ।**

16. सोलहवां- बाप से प्यार अर्थात पांच तत्वों से प्यार- तत्वों को किसने तमोप्रधान बनाया है, तुमने ही तमोप्रधान बनाया है, प्रकृति से प्यार, प्रकृति में जो विद्यमान पशु-पक्षी है, उन पशु-पक्षियों से भी प्यार । द्वापर से जो राजा महाराजा आये तो क्या करने लगे आखेट करने गये। हिंसा कहां से शुरू हुई? क्यों ये सब हिंसक बन गये प्राणी? पांच तत्वों को सकाश देनी है। आकाश में जाना है, आकाश को सकाश, धरती को, अग्नि माता को सकाश, कितना दिया है इस धरती ने हमको, कितनी हमारी पालना करती हैं ये मां, और हमने क्या किया है इस प्रकृति के साथ? दोहन किया है उसका। इस प्रकृति से पहले तो माफी मांगनी है। इस प्रकृति की सेवा करनी है। इस प्रकृति का संरक्षण करना है। दत्तात्रेय के 24 गुरूओं में, 5 गुरू तो यह प्रकृति के तत्व है, धरती से क्या सीखा? आकाश से क्या सीखा? सूर्य से क्या सीखा? चंद्रमा से क्या सीखा? हवा से क्या सीखा? कितना हमको यह प्रकति सिखाती है, रोज अमृतवेला इस प्रकृति को सकाश देनी है। रोज नुमाशाम को भी इस प्रकृति को भी सकाश देनी है। इस प्रकृति के मालिक हम है, प्रकृति का संबंध हमारे से हैं। प्रकृति की सेवा करनी है और प्रकृति को दूषित

नहीं करना है। चॉकलेट, बिस्किट खाया और रेपर खिडकी से बाहर फेंक दिया, गंदगी नहीं फैलानी है। प्रकृति को स्वच्छ करना है। स्थूल भी, सूक्ष्म भी और सूक्ष्म बायब्रेशन देना है प्रकृति को, बहुत सूक्ष्म बायब्रेशन्स । लोगों ने क्या किया? क्यों ये प्राकृतिक आपदा? हिल स्टेशन्स पर क्या हैं? होटल बनाकर रखे हैं विकारों के अड्डे और फिर प्राकृतिक आपदायें होती है। क्रूद्ध है प्रकृति, शांत करो उसको, शीतला देवी बन शीतलता की किरणें फैलानी है। इस प्रकृति की सेवा करनी है, इतनी इस प्रकृति की सेवा में लग जाओ, **पांच तत्वों में कि माया कितना भी कॉल करती रहे, उसके लिये हमारे पास टाइम ही नहीं है, क्योंकि हम मंसा सेवा में लगे हये हैं।**

सारी निमित्त टीचर्स बहनें संसार की सारी बहनें, उनके प्रति आज से कोई भी नेगेटिव संकल्प नहीं, कोई भी व्यर्थ संकल्प नहीं, हमेशा सोचना इन्हें भगवान ने निमित्त बनाया हैं। उनके मुख से जो कुछ भी निकल रहा है वह सीधा भगवान का। हो सकता है हमें वो समझ नहीं आ रहा, हो सकता है हमें लगता हैं ये गलत है। बाबा ने कहा दूर हो जाओ थोडे समय के लिये। परंतु विद्रोह न करना , विरोध में नहीं जाना। किसी बहुत पवित्र आत्मा के विरूद्ध संकल्प करना, षडयंत्र करना बहुत बड़ा पाप होगा। ऐसी आत्मा जिसने अपना सम्पूर्ण स्वाहा कर दिया है अपने आपको उसके विरूद्ध कुछ भी सोचना, बहुत बड़ा हिसाब बनाना है। इसलिए सारे कुमार, सारे अधकुमार, मातायें, कन्यायें, जो नौकरी करती हैं, शायद ये न सोचे हम नौकरी करती हैं, हम पैसे कमाती हैं इनसे ज्यादा पढ़ी लिखी हैं पर ये न भूलना इनको भगवान ने चुना है अपने यज्ञ के लिये। चाहती तो वो भी बहुत कुछ कर सकती थी। बलिदान की परिभाषा है उनका जीवन, उत्सर्ग है उनका जीवन, त्याग की पराकाष्ठा है उनका जीवन ।

बाप से प्यार अर्थात् मर्यादाओं से प्यार, बाप से प्यार अर्थात् सम्पूर्ण पवित्रता से प्यार, जो काम दिया वो अमृतवेला सभी मुख्य रूप से कुमार स्वयं से और बाबा से प्रतिज्ञा करके जायेंगे। ऐसा कोई चीज, ऐसी कोई बात नहीं करेंगे, जिसमें जरा भी .001 परसेन्ट अपवित्रता है। वो देखा होगा न, इलेक्ट्रिक बोर्ड में ऐसा लगा रहता है दो हडिड्या, ऊपर क्या लिखा रहता है? डेंजर। वो अपवित्रता है, अपवित्रता आ गई तो बाकि सब विकार अपने आप आ जायेंगे, जीवन ध्वस्त हो जायेगा समाप्त । आज की मुरली में शब्द है **सत्यानाश**। सुबह की साकार मुरली। बाप से प्यार अर्थात् संसार की हर आत्मा सभी का कल्याण हो। बहुजन हिताए , बहुजन सुखाए , सबका कल्याण हो, सबका, सबका भगवान से मिलन हो जाये। और लास्ट बाप से प्यार अर्थात प्रकति के तत्वों से प्यार इसके लिये दो बार 24 घण्टों में प्रकृति की सेवा करनी है। अमृतवेला और नुमाशाम, रेगुलर। इतना अलर्ट होकर बैठ जाओ, इतना अलर्ट होकर बैठ जाओ कि **उधर से माया, फोन पर फोन अलग अलग नंबर से कॉल करेगी एक नंबर नहीं उठा रहे हो तो और हर नंबर अंजान होगा जोकि पता ही नहीं चलेगा कहां से आ रहा है पर हमारा एक ही उत्तर होगा इस रूट की सभी लाइनें व्यस्त है।**

ओम शांति